Tender Heart High School, Sector-33B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी व्याकरण शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण - नौ एवं दस

उपविषय - निबंध-लेखन

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौ एवं दस की पृष्ठ संख्या -45 पर दिए निबंध-लेखन पर चर्चा करेंगे।

बच्चो! 'निबंध' दो शब्दों से मिलकर बना है 'नि' और 'बंध'। जिसका अर्थ है भली प्रकार से बंधी हुई रचना अर्थात् वह रचना जो विचारपूर्वक और क्रमबद्ध रूप से लिखी गई हो। अतः कहा जा सकता है - निबंध वह गद्य रचना है, जो किसी विषय पर क्रमबद्ध रूप से लिखी गई है।

निबंध के विषय असीमित हैं। किसी भी विषय पर निबंध लिखा जा सकता है। ये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि विषय पर लिखे जाते हैं। संसार का हर विषय, हर वस्तु, हर व्यक्ति एक निबंध का केन्द्र हो सकता है। निबंध को तीन अंगों में लिखना चाहिए। भूमिका, मध्यभाग एवं उपसंहार। भूमिका को परिचय या प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें निबंध की विषय वस्तु का परिचय दिया जाता है। मध्यभाग निबंध का मुख्य भाग होता है। इसमें निबंध के विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन होता है। यह निबंध का सबसे बड़ा भाग होता है।

निबंध के अंतिम अनुच्छेद को उपसंहार कहा जाता है, जिसमें पूरे लेख का संक्षिप्त सार दिया गया होता है।

निबंध साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। निबंध लिखते समय निम्नलिखित कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

निबंध लेखन से पूर्व विषय को ध्यानपूर्वक पढ़ें। यह प्रश्न विकल्प सहित होता है अत: सभी विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही विषय का चुनाव करें।

लिखते समय एक-दो बार प्रश्न को बीच में अवश्य पढ़ लें कि कुछ छूट तो नहीं गया है।

सूक्तिपरक प्रस्ताव को ध्यान से पढ़ें। उस पर 'लेख' लिखना है अथवा कहानी निर्देश के अनुसार ही लिखें। सूक्ति का अर्थ पहले या बाद में अवश्य समझा दें।

प्रस्ताव / निबंध लेखन की भाषा सरल, शुद्ध एवं प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।

बच्चो! अब मैं आपको निबंध का विषय उदाहरण के रूप में समझाऊँगी। फिर आपको एक निबंध स्वयं करने के लिए दिया जाएगा।

विषय - अध्ययन से आप क्या लाभ प्राप्त कर सकते हैं? इस पर एक प्रस्ताव लिखिए।

मनुष्य हमेशा सुख चाहता है। इसकी प्राप्ति के लिए वह कर्म करता है और उससे जो आनंद प्राप्त करता है, उसमें वह परिश्रम और कष्ट भूल जाता है। मनुष्य धन कमाकर सभी सुख सुविधाएँ जुटाता है सिर्फ़ आनंद पाने के लिए। यदि उसके जीवन में आनंद का रस न हो तो जीवन नीरस हो जाता है। नीरस जीवन जीने के कारण वह हमेशा दुःखी व चिड़चिड़ा रहता है तथा अपना गुस्सा दूसरे पर उतारता है।

आनन्द पाने के कई तरीके होते हैं कोई खेलों द्वारा आनंद प्राप्त करता है तो कोई घूम-फिरकर नए-नए स्थानों पर सैर-सपाटा करके। किसी को संगीत में आनंद आता है तो किसी को भगवान का भजन करने में। लेकिन अध्ययन से जो आनंद प्राप्त होता है,

वह सबसे श्रेष्ठ है। अध्ययन से तात्पर्य है - अच्छी-अच्छी पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करना न केवल पन्ने पलटना। अध्ययन करने वाला कभी अकेला नहीं रहता है। अच्छी पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र होती हैं।

अध्ययन से एक लाभ यह होता है कि हम जीवन की अनेक समस्याओं को सुलझा सकते हैं। पुस्तक अध्ययन के द्वारा हम संसार के अनेक महापुरुषों के बारे में जान सकते हैं तथा उनके जीवन को आदर्श मानकर उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर जीवन को आनंदित कर सकते हैं। अध्ययन के माध्यम से हम घर बैठे देश-विदेश के बारे में जान सकते हैं।

बाज़ार में अनेक ऐसी पुस्तकें भी हैं जो मन में कुविचारों और दुर्भावनाओं को जन्म देती हैं। इसलिए हमें केवल अच्छी पुस्तकों का ही अध्ययन करना चाहिए बुरी पुस्तकों का नहीं। जिस प्रकार अच्छी और चटपटी चीज़ें मुख को तरह-तरह के स्वाद देती हैं, लेकिन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं, उसी प्रकार अश्लील साहित्य मनुष्य के मन को विकृत कर देता है। इसलिए अध्ययनशील व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अच्छी, उपयोगी, सुरुचिपूर्ण और शिक्षाप्रद पुस्तकें ही पढ़े, तभी हमारे चरित्र का गठन होगा और हमें आत्मिक आनंद प्राप्त हो सकेगा।

बच्चो! प्रस्तुत निबंध में हमने अध्ययन क्या होता है। अध्ययन के क्या लाभ हैं, साहित्य पढ़ने का आनंद तथा पुस्तकें - हमारी सच्ची मित्र हो सकती संबंधी आदि का वर्णन विस्तारपूर्वक किया। सभी छात्र इसे पढ़कर अपनी-अपनी व्याकरण की उत्तर-पुस्तिका में स्वयं अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखेंगे।

अब आपको एक और विषय गृहकार्य के रूप में करने के लिए दिया जा रहा है। विषय को

ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं इन्हें स्वयं अपनी- अपनी व्याकरण की उत्तर - पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए :-
हमें अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्या-क्या संघर्ष करने पड़े ? इस संदर्भ में स्वतन्त्रता का महत्त्व बताते हुए अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों का वर्णन कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]